अपना कौन

प्रकृति को मत छेड़ो।
उसके रूष्ट होने से तुम्हारा जीवन असम्भव हो जायेगा।

अशोक 'मानव'

अपना कौन है, इसकी जानकारी हर जीव प्राणी की आवयकता है। मानव के अतिरिक्त अन्य जीव–प्राणी की भाषा 'भावना' है। इसलिए उन्हें अपना पहचानने में कोई परेशानी नहीं होती है। इसे उदाहरण द्वारा और अच्छी तरह पहचाना जा सकता है। जैसे जानवर कोई ग्रंथ नहीं पढ़ते है, न ही किसी डाक्टर की सलाह लेते हैं, घूमते हुए अपना भोजन करते हैं फिर भी कभी ऐसी विशैली वस्तु नहीं खाते हैं जो उन्हें नुकसान करे। इसके ससाथ आप किसी जानवर को भोजन दिखाकर खाने के लिए बुलाइये पर अपने मन में उसके प्रति क्रोध और मारने जैसी भावना छोड़िए। वह जानवर आपकी इस भावना को पहचान लेगा और आपके पास नहीं आयेगा, बल्कि आपसे दूर भागने का प्रयास करेगा। इसके अतिरिक्त आप उस जानवर को कुछ खाने के लिए मत दिखाइये, उसक प्रति अच्छी भावना छोड़िए और प्रेम से बुलाइये, वह धीरे–धीरे आपके पास आ जायेगा। मानव समाज की भाशा चालाकी पूर्ण होती है, जिसे वह पहचान नहीं पाता है, जिसके कारण वह लोगों से

धोखा खाता रहता है।अपना कौन? पराया कौन? इसकी आवश्यकता हर किसी को पड़ती है। जिससे फायदा होता है वह अपना है। जिससे नुकसान पहुँचता है वही पराया है। अपना गुण अपना होता है। यदि आपके अन्दर गुण है तो सभी लोग आपको चाहेंगे, नहीं तो खून के रिश्ते भी दूरी बढ़ा लेते हैं यहाँ पर एक प्रश्न उठाया जा सकता है कि गुण क्या होता है? गुण हर व्यक्ति के अन्दर होता है, जो इसे जगा लेता है वही इसकी सच्ची पहचान कर पाता है, जिस क्रिया से किसी को हानि न पहुँचे वही सच्चा गुण होता है। आपका मन जिस कार्य के करने से आनन्दित होता है और उसका समर्थन करता है वह कार्य करना चाहिए, ऐसा कार्य प्रकृति विरोधी नहीं हो सकता है। सत्य–असत्य आलेख में इसे विस्तार से पढ़िएगा।

गुण की परिभाषा वर्तमान समय में दो तरह से की जाती है एक शारीरिक गुण से दूसरा धन के आधार पर। यही गुण शारीरिक होता है, इस गुण में स्थायित्व होता है जबकि धन में स्थायित्व नहीं होता यह कब साथ छोड़ दे ,इसका काई भरोसा नहीं होता है। धन के आधार पर स्वार्थी लोग जुड़ते हैं, जब धन खत्म हो जाता है तब ऐसे लोग साथ छोड़ देते हैं। शारीरिक गुण में ऐसी बात नहीं पायी जाती है। इस गुण को सभी महत्व देते हैं और हमेशा देते रहते हैं। महत्व सिर्फ तत्व के गुण का होता है, धन इसे प्राप्त करने का सिर्फ एक माध्यम होता हैं इसलिए इसे माध्यम ही माना जाए, न कि जीवन का सबकुछ। सब कुछ तो व्यक्ति का गुण होता है जो फूल की तरह प्रकृति में खुशबू बिखेरता है। इसे पढ़कर आपका अपना कौन है? इसकी पहचान आप अच्छी तरह कर सकते हैं। आप अपना अपने अन्दर पैदा करें न कि सिर्फ दूसरे के अन्दर देखें। यदि आपके अन्दर गुण होता तो अन्य अपने आप आपके हो जायेंगे।□